शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

शिक्षण संवाद

वर्ष-२ अंक-४

माह : अक्टूबर २०१६

आओ हाथ से हाथ मिलाएं,
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-२
अंक-४

माह- अक्टूबर २०१६

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. सर्वेष्ट मिश्र

सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक

प्रांजल सक्सेना

आनन्द मिश्र

सह सम्पादक

डॉ0 अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

आनन्द मिश्र

विशेष सहयोगी

शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

समाज को उत्कृष्ट बनाने के लिए उत्कृष्ट नागरिकों की उपस्थिति परमावश्यक होती है और उत्कृष्ट नागरिक न तो आसमान से उतरकर आते हैं न ही किसी फैक्ट्री का उत्पाद होते हैं। इन उत्कृष्ट नागरिकों का निर्माण तो शिक्षा के उन मंदिरों में होता है जिन्हें हम विद्यालय कहते हैं।

विद्यालयों में शिक्षण के तरीके नित–प्रतिदिन बदल रहे हैं। तेजी से बदलती दुनिया में रटन्त पद्धति बहुत पीछे छूट चुकी है और नवाचारों का दौर शुरू हो चुका है। शिक्षकों के लिए यह बहुत आवश्यक है कि वो बच्चों की पढ़ाई में रुचि जगाने और अधिगम उद्देश्य प्राप्त करने के लिए नित नवीन पद्धतियों को या तो ईजाद करें या अन्य शिक्षक साथियों से सीखें। ऐसे में मुझे मिशन शिक्षण संवाद एक बहुत ही उपयोगी मंच लगा। हाल ही में हुई प्रयागराज में हुई कार्यशाला में एक से एक प्रस्तुतिकरण देखकर लगा कि समाज में बेसिक शिक्षा विभाग की छवि शीघ्र ही बदलने वाली है।

यह बहुत ही सुंदर बात है कि मिशन शिक्षण संवाद अपने उत्कृष्ट कार्यों का लगातार संकलन भी कर रहा है। बेसिक शिक्षकों के द्वारा लिखे गए स्तम्भों और पूर्णतया बेसिक शिक्षकों के लिए समर्पित इस पत्रिका की मैं बहुत सराहना करता हूँ तथा आगामी अंक की सफलता के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(रमेश कुमार तिवारी)
सहायक शिक्षा निदेशक (बेसिक)
प्रयागराज मण्डल, प्रयागराज

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

आज हर व्यक्ति सुख– शान्ति की खोज के लिए अनेकानेक प्रयासों के साथ सतत प्रयत्नशील है। जिसके मूलाधार शिक्षा के रूप में विविध प्रयास भी किए जा रहे हैं लेकिन फिर भी कहीं न कहीं अशान्ति के कारण का केन्द्र बिन्दु शिक्षा ही आता है क्योंकि हम शिक्षा के मात्र एक पक्ष के साथ आगे बढ़ते जा रहे हैं। जो अशान्ति और दुखों का कारण भी बनती है। आज शिक्षा के जिस पक्ष के साथ हम सभी आगे बढ़ रहे हैं उससे व्यक्तिगत उपलब्धियों एवं श्रेष्ठता में अकल्पनीय वृद्धि हुई है। जिसने हमें व्यापारिक सोच के साथ सिर्फ अपने व्यक्तिगत हित लाभ के लिए जीवन जीना सिखाया है। जिससे इस देश को अनेकों महान व्यक्ति तो प्राप्त हो रहे हैं लेकिन जब शिक्षा के दूसरे पक्ष को देखते हैं तो आज समाज में उग्रता, अविश्वास और अधैर्य की खरपतवाररूपी फसल भी लगातार बढ़ती नजर आ रही है। जिसका परिणाम यह प्राप्त हो रहा है कि सामाजिक प्रेम, विश्वास और धैर्य जैसे मानवता के रक्षक मानवीय गुणों का लगातार ह्रास हो रहा है। आज हर कोई सीधे लाभ और सम्मान की फसल तो काटना चाहता है लेकिन बीज बोने एवं फसल की परवरिश के बाद फल पाने का इन्तजार कोई नहीं करना चाहता है। हर कोई पहले पद, पॉवर की प्रतिष्ठा पाना चाहता है इसके बाद स्वयंसेवी और समाजसेवी होने का प्रदर्शन करना चाहता है लेकिन अपने कर्तव्य की सकारात्मक शक्ति से समाज को अपने स्वयंसेवी और समाजसेवी होने का अहसास कराने का अवसर प्रदान नहीं कराना चाहता है।

यही असंतुलित शिक्षा व्यवस्था के बीच मिशन शिक्षण संवाद एक परिवार के रूप में शिक्षा के दूसरे पक्ष एवं आपस में हाथ से हाथ मिलाते हुए, समाज में प्रेम, विश्वास एवं धैर्य के साथ संतुलन बनाने का सकारात्मक प्रयास कर रहा है। जहाँ निस्वार्थ बिना किसी लोभ–लालच और पद– प्रतिष्ठा के शिक्षा के उत्थान और समाज के कल्याण के लिए सकारात्मक कर्तव्यों के बीज बोने के, टीम के रूप में प्रेम, विश्वास और धैर्य के साथ सतत प्रयास किए जा रहे हैं। इन्हीं सकारात्मक प्रयासों के बीच विविध ज्ञान के संग्रह एवं पक्षों के साथ मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका "शिक्षण संवाद" अनेकों उपयोगी स्तम्भों के साथ आप सभी के सामने प्रत्येक माह प्रकाशित की जाती है। आशा है विगत माह की भाँति इस माह का अंक भी आपके विश्वास के साथ उपयोगी सिद्ध होगा।

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति	7
डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र की कलम से	8–9
मिशन गीत	10
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	11–12
निन्दक नियरे राखिए	13
टी.एल.एम.संसार	14–15
नवाचार	16
शिक्षण गतिविधि	17–18
इंग्लिश मीडियम डायरी	19
प्रेरक–प्रसंग	20–21
सद्विचार	22
बाल साहित्य	23
बच्चों का कोना	24–26
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	27
महिला अध्यापकों की चुनौतियां	28–29
योग विशेष	30–31
खेल विशेष	32–33
ज्ञान का यान विज्ञान	34–35

शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं वरन भारतीय भाषाएँ होनी चाहिए

शिक्षण संवाद

शिक्षा व्यक्ति के अंदर निहित सम्पूर्ण विशेषताओं के प्रकटीकरण का एक महत्वपूर्ण साधन है। हम जीवन को सही रूप में शिक्षा के माध्यम से ही जीने लायक बना पाते हैं, या फिर यूँ कहें कि शिक्षा ही हमें संपूर्णता के साथ जीवन जीने लायक बनाती है। शिक्षा सम्पूर्ण जीवन जीने की प्रक्रिया है। अब प्रश्न यह उठता है कि शिक्षा देने का माध्यम क्या होना चाहिए? बच्चा जन्म के उपरांत अपनी माँ के सानिध्य में सबसे अधिक रहता है, अतः वह उसी की भाषा में चीजें सीखना प्रारंभ करता है। फिर धीरे–धीरे परिवार के अन्य सदस्यों के सम्पर्क में आता है और भाषा का विकास प्रारंभ हो जाता है। शिक्षा का माध्यम सदैव सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। शिक्षण की क्रिया जितनी अधिक हमारी मातृभाषा में होगी उतनी ही अधिक प्रभावी होगी।हर देश काल की परिस्थितियाँ भिन्न होती हैं और वहाँ दी जाने वाली शिक्षा व शिक्षण विधियाँ भी उसी के अनुरूप होती हैं। भारत में यदि शिक्षा का स्तर ऊँचा करना है तो निश्चित ही हमें शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाओं को बनाना सुनिश्चित करना होगा और सम्पूर्ण राष्ट्र को एक मुख्य तथा अन्य राजकीय भाषाओं को स्थान देना होगा।

भाषा संस्कारों को आगे ले जाने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। ऐसे में किसी अन्य भाषा में शिक्षण का कार्य सम्पादित करना नौनिहालों को संस्कार विहीन बनाने की पहली सीढ़ी है। हमारे देश में आज से ही नहीं वरन प्राचीन काल से ही यह परम्परा रही है कि शिक्षा मातृभाषा में ही प्रदान की जाए। महात्मा गांधी ने कहा था कि शिक्षा कि प्रारंभिक कक्षाओं में शिक्षण का कार्य मातृभाषा में ही किया जाना चाहिए तभी बच्चे का विकास सम्पूर्ण रूप से किया जा सकेगा।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या हमारी शैक्षिक नीतियाँ हमें एक शिक्षक के रूप में इतनी स्वतंत्रता देती हैं कि हम अपने नौनिहालों को व्यक्तिगत रूप से एक बेहतर नागरिक बनाने की एक मजबूत नींव डाल सकें। विभिन्न नवीन योजनाओं ने छात्रों को विद्यालय तक पहुँचा तो दिया और वहाँ पर उन्हें रोकने के लिए जो महत्वपूर्ण कार्य है उसके लिए उचित गाइड लाइन बनाने में पूर्णतः सफल नहीं है।

शिक्षा का माध्यम सिर्फ प्रारंभिक स्तर पर ही नहीं वरन आगे आने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं में भी सफलता को प्रभावित करता है और कई बार असफलता के लिए पूरी तरह जिम्मेदार भी होता है। हम किसी भी बात को जितने बेहतर ढंग से अपनी मातृभाषा में समझ और समझा सकते हैं उतना लाख प्रयास के बावजूद किसी अन्य भाषा या माध्यम में नहीं।

शिक्षा का माध्यम चुनने तथा उसमें सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना राज्य सरकार की जिम्मेदारी होनी चाहिए। यदि हम अपने आने वाले समय में एक बेहतरीन भारत का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें बुनियादी समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए उसके अनुरूप शिक्षण प्रणाली विकसित करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी उठानी होगी अन्यथा विश्व में हमारी शिक्षा व्यवस्था दिनों–दिन पिछड़ती जाएगी और हम विकसित देशों की श्रेणी में शामिल न होकर विकासशील देश ही रह जाएँगे।

डॉ0 रंजना वर्मा 'रैन'
प्राथमिक विद्यालय–बूढ़ाडीह–1,
विकास खण्ड–भटहट,
जनपद–गोरखपुर (उ.प्र.)

मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े शिक्षक दे रहे बेसिक शिक्षा विभाग के महत्वाकांक्षी सपनों को नयी उड़ान

शिक्षण संवाद

वर्तमान दौर में जब बेसिक शिक्षा विभाग में मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी से लेकर मंत्री डॉ0 सतीश द्विवेदी, महानिदेशक श्री विजय किरण आनंद जी, निदेशक डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह जी सहित समस्त टीम जिस तरह बेसिक शिक्षा विभाग के गौरव को वापस लाने के सपने देख रही है, उसे मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े शिक्षक पिछले कई वर्षों से पूरा करने के लिए जीतोड़ मेहनत कर रहे हैं। पूरे प्रदेश में अपने बेहतरीन कार्यों से सरकारी विद्यालयों की की दशा में अभूतपूर्व परिवर्तन करके सरकारी विद्यालयों की हमारे मेहनती शिक्षकों ने समाज में जिस तरह छवि बदली है, मिशन शिक्षण संवाद उसका वाहक रहा है। इससे जुड़े शिक्षक अपने नवाचारी कार्यों, आईसीटी के प्रयोग, कक्षा शिक्षण में नित नयी तकनीकों का अविष्कार व प्रयोग, जनसहयोग से भौतिक परिवेश में अप्रत्याशित सुधार, शैक्षिक सेमिनारों के माध्यम से अच्छा कार्य कर रहे शिक्षकों के अनुभव साझा करने के अवसर देकर सम्मानित करने जैसे कार्यों को जमीन पर सफलतापूर्वक उतारकर दिखाया है। इसी का परिणाम है है कि प्रदेश के जनप्रतिनिधियों / उच्च अधिकारियों से लेकर जनपदों में जनप्रतिनिधियों व शैक्षिक प्रशासन के लोगो ने मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े शिक्षकों के कार्यों की प्रशंसा करते हुए उन्हें अनवरत सम्मानित करने का कार्य किया है। वर्तमान में बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा पूरे प्रदेश में शिक्षकों को उनके कार्यों के आधार पर उन्हें प्रोत्साहित करते हुए सम्मानित करने की जो परंपरा चल रही है उसमें। शुरुआत से लेकर अभी तक अधिकांश मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े शिक्षकों को ही स्थान मिला है क्योंकि बेसिक शिक्षा विभाग शिक्षण में जिन नयी तकनीकों अथवा विधाओं के प्रयोग को प्रेरित करने हेतु यह कार्यक्रम चला रहा है, मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े शिक्षक उन विधाओं को एक दूसरे से सीखकर पहले से ही उसे अनवरत प्रयोग कर रहे हैं। इसी का प्रतिफल है कि राष्ट्रीय/राज्य स्तरीय विभिन्न पुरस्कारों से लेकर राज्य स्तर की जितनी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं उसमें यह नवाचारी शिक्षक हमेशा आगे रहे। हालाँकि अपने नवीन सोच और कार्यों को जमीन पर उतारने के दौरान इन शिक्षकों को समाज के कुछ शिक्षक साथियों/अधिकारियों/प्रतिनिधियों और आम जनमानस के कुछ लोगों के विरोध

और असहयोग का सामना भी करना पड़ रहा है लेकिन आत्मविश्वास के पक्के इन शिक्षकों ने हार नहीं मानी और आज अपने जिलों और प्रदेश में अपनी अलग पहचान बनाने में कामयाब हुए हैं। वर्तमान दौर में जब विभाग के महानिदेशक श्री विजय किरण आनंद जी ''ऑपरेशन कायाकल्प'', रिसोर्स समूह, निष्ठा जैसे शिक्षक प्रशिक्षणों को लागू कर हमारी शिक्षा व्यवस्था के स्वर्णिम काल को लाने के लिए प्रयास कर रहे हैं ऐसे में भी मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े शिक्षक अपने जिलों में आगे आकर उनके अभियान को गति देने में पूरी तत्परता से लगे हैं। ऑपरेशन कायाकल्प को लेकर तो मिशन शिक्षण संवाद ने गत कई वर्षों से अभियान चला रखा है और वर्तमान में ऐसे शिक्षकों के विद्यालयों की सामग्री को सोशल मीडिया पर प्रचारित भी कर रहा है। मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े शिक्षकों ने अपनी मेहनत और तकनीकी टीम की निःस्वार्थ मेहनत से गत वर्षों में मिशन शिक्षण संवाद की पहचान एक ऐसे मंच के रूप में स्थापित की है जो न केवल शिक्षक का सम्मान, शिक्षा का उत्थान की बात को चरितार्थ करके दिखाया है बल्कि समाज में बेसिक शिक्षा व्यवस्था के बारे में बनी नकारात्मक छवि को तोड़कर एक सकारात्मक संदेश देने का काम कर रहा है। इससे प्रभावित होकर दूसरे कई शिक्षक समूहों ने भी अब इस दिशा में काम करना शुरू किया है जो बेसिक शिक्षा के उत्थान की दिशा में एक सुखद स्थिति है। हमारा नारा है कि शिक्षक सम्मान– शिक्षा का उत्थान। मिशन शिक्षण संवाद के साथी अहर्निश इन नारे को साकार रूप देने में लगे हैं। हमे ऐसे शिक्षकों की टीम पर गर्व है।

डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र
सम्पादक/राष्ट्रपति पदक प्राप्त प्रधानाध्यापक
आदर्श प्राथमिक विद्यालय मूड़घाट, बस्ती
sarvestkumar@gmail.com
9415047039

मिशन गीत

लानी है शिक्षण की नव लहर

शिक्षण संवाद

छल, राग, द्वेष व आडंबर, खींचें जब ऐसा कोई भंवर,
कर्तव्य भाव को कर जाग्रत, लानी है शिक्षण की नव लहर।

मन में सदभावों को रखकर, बढ़ चले कदम से कदम मिलाकर,
हाथों में हाथ थमाकर, लानी है शिक्षण की नव लहर।

रणक्षेत्र में बाकी है अभी अज्ञान और अवनति के अवसर,
हौंसलों में जान फूंककर, लानी है शिक्षण की नव लहर।

घर–घर विद्या दीप जलाकर, प्रज्वलित ज्ञान मशाल पकड़कर,
रोजगार–परक निपुणता देकर, लानी है शिक्षण की नव लहर।

मुख्य धारा से जोड़कर, जाने ना देंगे किसी को भी छूटकर,
सम्पूर्ण विकास एकमात्र लक्ष्य, लानी है शिक्षण की नव लहर।

उपेक्षा व चुनौतियों से डरना नहीं, ना हार मानना घबराकर,
विश्वास जीतना कर्म कर, लानी है शिक्षण की नव लहर।

दिखा देंगे खुद को साबित कर, ना रण छोड़ेंगे किसी से दबकर,
जब तक साँस बाकी प्राणों में, लानी है शिक्षण की नव लहर।।

ज्योति चौधरी
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय इस्लाम नगर,
विकास खण्ड– मुरादाबाद,
जनपद– मुरादाबाद।

बेसिक शिक्षा
के
अनमोल रतन

३५७ उर्मिला देवी पासी सहायक अध्यापक पूर्व माध्यमिक विद्यालय खेम्हईपुर, भदोही

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/08/blog-post_9.html

३५८ अनुष्का जड़िया प्राथमिक विद्यालय भग्गू का पुरवा, महुआ, बाँदा।

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/08/blog-post_85.html

३५९ मृदुला गंगवार प्रधानाध्यापिका मॉडल प्राइमरी स्कूल सरायतल्फी, क्यारा, बरेली

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/08/blog-post_55.html

३६० संयुक्ता सिंह प्रभारी प्रधानाध्यापिका प्राथमिक विद्यालय बथुआवर, सिकरारा, जौनपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/08/blog-post_84.html

३६१ उपमा शर्मा कन्या पूर्व माध्यमिक विद्यालय लिलौन, शामली

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/08/blog-post_67.html

३६२ प्रतिभा गुप्ता सहायक अध्यापिका पू०मा०वि० खेमकरनपुर विजयीपुर, फतेहपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/09/blog-post_3.html

३६३ नीरज पन्त विद्यालय. राजकीय जूनियर हाईस्कूल रौल्यानाए गरुड़, बागेश्वर, उत्तराखण्ड

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/09/blog-post_4.html

३६४ सुमन कुशवाहा प्रधानाध्यापिका, प्राथमिक विद्यालय भगवानपुर, नेवादा, कौशाम्बी

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/09/blog-post_44.html

३६५ मोहम्मद आलम खान PS/UPS बसंतपुर, गोण्डा

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/09/psups.html

३६६ प्रियंका पांडे कन्या पूर्व माध्यमिक विद्यालय कनाकोर, विकास क्षेत्र. ललौरीखेड़ा, जनपद. पीलीभीत उत्तर प्रदेश. 262001

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/09/262001.html

३६७ रामनाथ प्रजापति प्र०प्र०अ० कम्पोजिट विद्यालय चटिहा विकास खण्ड . अमौली जनपद. फतेहपुर।

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/09/blog-post_26.html

नवाचारी शिक्षक

शिक्षण संवाद

नवाचार व नवाचारी शिक्षक आज शिक्षकों में मतभेद का एक अहम कारण बनता जा रहा है। यहाँ पर पहले यह समझ लेना आवश्यक है कि नवाचार है क्या? विद्यालय में शासनादेशानुसार फल, दूध, ड्रेस इत्यादि वितरण कर, वृक्षारोपण कर, कोई शपथ दिलाते हुए, दवाई खिलाते हुए व ऐसे ही अन्य कार्य करते हुए फोटो सोशल मीडिया पर पोस्ट करना नवाचार की श्रेणी में नहीं आता है।

नवाचार का तात्पर्य नवीन शिक्षण विधियों व गतिविधियों का शिक्षण में प्रयोग कर शिक्षण को रुचिकर बनाना है। नवीन के साथ–साथ उन क्रिया–कलापों को भी नवाचार की श्रेणी में ही रखा जाएगा जो हमारे वरिष्ठ व साथी अध्यापक पहले से ही शिक्षण में प्रयोग कर उचित परिणाम प्राप्त कर रहे हैं। यहाँ पर ध्यान रखने वाली बात यह है कि नवाचार का प्रयोग केवल दिखावे भर के लिए या सिर्फ फोटो खिंचाकर वाहवाही प्राप्त करने तक के लिए ना हो।

कई बार विभाग में होने वाले प्रयोगों व परिणामों के लिए बहुत से शिक्षक नवाचारियों को आरोपित करते हैं जबकि अक्सर होने वाले निरीक्षणों से प्राप्त स्थिति कुछ अलग ही दर्शाती है जिस पर यहाँ बात करना उचित नहीं है। इसी विरोध के कारण हमारे बीच के बहुत से शिक्षक नवाचारों का प्रयोग करते हुए भी सामने नहीं आना चाहते व विद्यालयों में सोशल मीडिया के बढ़ते दखल से चिंतित हैं।

उच्च स्तरीय शिक्षा अधिकारियों व सलाहकारों को भी समझना होगा कि गुणवत्तापुर्ण शिक्षा के लिए अध्यापकों पर अनर्गल दबाव बनाने की बजाए प्रोत्साहनात्मक रवैया अपनाना होगा। अन्त में निष्कर्ष यही है कि सोशल मीडिया व नवाचारों का प्रयोग सकारात्मक परिणाम तो देगा परन्तु साथ ही शिक्षकों को चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के लिए तैयार रहना होगा।।

राजीव कुमार गुर्जर,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय बहादुरपुर राजपूत,
विकास खण्ड–कुन्दरकी
जनपद–मुरादाबाद।

स्थानीय मान टोपी

TLM का नाम– place value cap(स्थानीय मान टोपी)

कक्षा– 1–2

विषय– गणित

आवश्यक सामग्री–चार्ट पेपर, ग्लू, कैंची, डेकोरेटिव टेप

TLM की उपयोगिता–छात्रों को स्थानीय मान का ज्ञान देना

श्रीमती सुमन यादव
सहायक अध्यापक
आ.प्रा.वि. चौड़ा, सहादतपुर
ब्लॉक –बिसरख,
जिला– गौतमबुद्धनगर

opposite words का TLM

हिंदी और अंग्रेजी दोनों का खेल–खेल में बच्चों को विलोम शब्द यानी opposite words का TLM

शून्य निवेश द्वारा यानी
best of waste

विषय अंग्रेजी और हिंदी दिनों का

सामग्री

कागज का गत्ता चार्ट पेपर कागज
पेंसिल, रबर, स्केच कलर, कैंची, फेविकॉल

विधि

कागज के गत्ते के 2 गोल बड़े आकार में काटेंगे गोल बनाने के लिए परकार से भी बना सकते हैं। उस पर क्रॉस । साइड में कटिंग करेंगे आमने–सामने उसके विपरीत विलोम शब्द लिखेंगे बनाकर कलर करेंगे जिससे सुंदर दिखे फिर दोनों गोलाकार गत्ते को बीच में एक पिन से कस देंगे इस तरह वो गत्ते एक दूसरे ओर घूम सके।

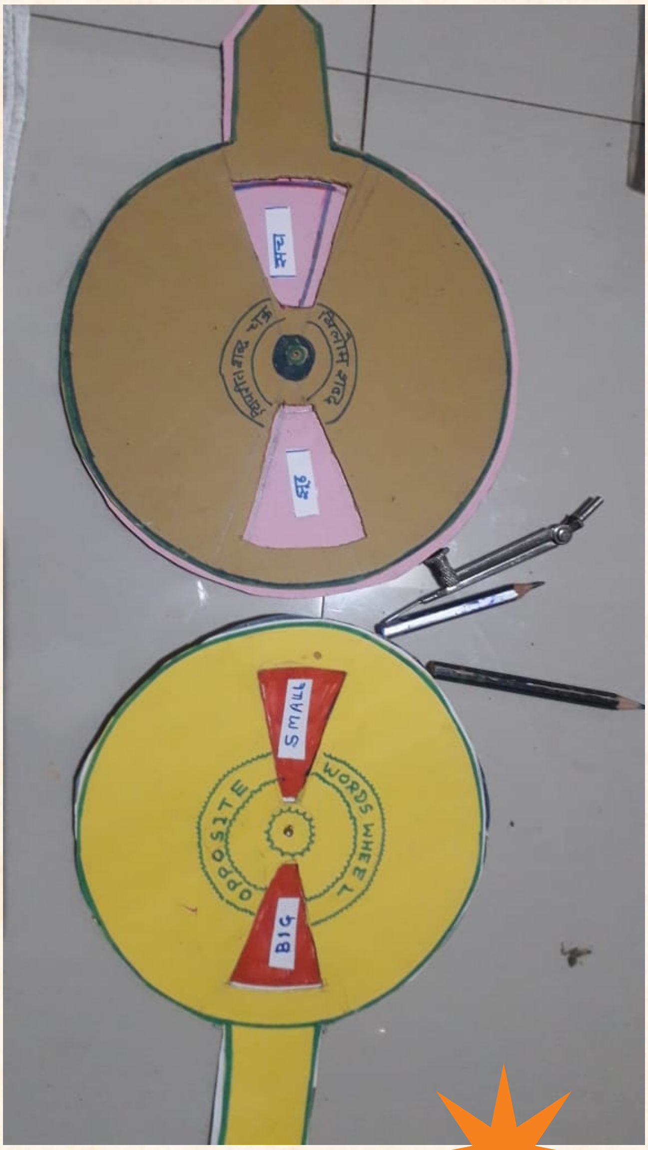

उपयोगिता

बच्चा खेल–खेल में जल्दी सीखेगा और घुमाने से शब्द के सामने के बॉक्स में सही विलोम शब्द उसे मिलेगा। जिससे वो खुद पढ़ के जल्दी सीखेगा। साथ ही बच्चों को घर पर बनाने के लिए भी दिया कि खुद करके सीखो।

माधुरी पौराणिक,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय हस्तिनापुर,
विकास खण्ड–बड़ागाँव,
जनपद–झाँसी।

नवाचार

सुपर 30
30 बच्चे, 30 प्रकरण, 30 स्टार

उद्देश्य– बच्चों में सीखने की रूचि उत्पन्न करना।

विवरण –30 बच्चे, 30..प्रकरण, 30..स्टार

इसमें हमने कक्षा 1..5 तक के 30 बच्चों का चयन किया है उन्हें 30 प्रकरण (उनकी कक्षानुसार)सीखने के लिए दिए गये हैं। प्रत्येक प्रकरण के लिए बच्चे को एक स्टार दिया जा रहा है। इस प्रकार 30 स्टार एक बच्चा प्राप्त कर सकता है। जो बच्चे 25 या उससे अधिक स्टार प्राप्त करेंगे 8 मार्च को महिला दिवस के अवसर पर विद्यालय में कार्यक्रम आयोजित कर ऐसे बच्चों और उनकी माता को सम्मानित किया जाएगा।

यहाँ बच्चों को ये प्रकरण सिखाने के लिए विभिन्न गतिविधियों जैसे रोल प्ले, खेल–खेल में शिक्षा आदि का प्रयोग किया जा रहा है। साथ ही विभिन्न प्रकरणों को कविता में बदलकर कविता के माध्यम से सिखाया जा रहा है जिससे बच्चे कठिन से कठिन प्रकरण भी रूचि के साथ सीख रहे है और बच्चों में एक स्वच्छ प्रतिस्पर्धा की भावना का भी विकास हुआ है।

प्राइमरी स्कूल अदलपुर, डिलारी की शिक्षिका संयोगिता ने की पहल, 30 बच्चों को चुनकर दे रही हैं प्रशिक्षण, हर अच्छे परिणाम पर मिलता है स्टार

प्राइमरी के सुपर-30 में स्टार बनकर चमकेंगे अदलपुर डिलारी के मेधावी

इनसे सीखें

मुरादाबाद | नीलांजलि भारद्वाज

बिहार के आनंद कुमार ने सुपर-30 बनाई, जिसपर बॉलीवुड ने फिल्म भी बन गई। आनंद कुमार के सुपर-30 ने गरीब बच्चों को पढ़ाकर आईआईटी में पढ़ने का सपना साकार किया। इसी तर्ज पर मुरादाबाद की एक शिक्षिका ने भी सुपर-30 बनाई है। लेकिन इस सुपर-30 का अंदाज थोड़ा अलग है। यहां बच्चे पहली से पांचवी क्लास के हैं और इन्हें सिखाने के लिए बुनियादी तरीकों का प्रयोग किया जा रहा है। प्राइमरी विद्यालय अदलपुर, डिलारी की प्रधानाध्यापक संयोगिता ने पिछले साल सुपर-5 के नाम से एक टीम बनाई थी। रिजल्ट अच्छा आया तो इसकी संख्या 5 से 30 हो गई। बच्चों सिखाने के लिए सामान्य ज्ञान/हमारा परिवेश को पंद्रह, अंग्रेजी को दस, गणित को पांच चैप्टरों में बांटा है। हर चैप्टर के लिए समय निर्धारित है। क्लास पूरी करने के लिए फरवरी लक्ष्य रखा गया है।

डिलारी के अदलपुर प्राइमरी स्कूल में बच्चे को पढ़ाती शिक्षिका।

यह है कार्ययोजना

प्रकरणों को सिखाने के लिए बच्चों के लिए कविताएं तैयार की हैं। कक्षा में सुपर-30 का चार्ट बनाया गया है। जिसमें सभी बच्चों के नाम और प्रकरण लिखे हैं, जो बच्चा जिस प्रकरण को सीख लेता है उसके नाम के आगे हर प्रकरण का एक स्टार लगता है। इसे बैठक में अभिभावकों से साझा करते हैं। अंत में आठ मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर 30 में ज्यादा स्टार प्राप्त करने वाले बच्चों की माताओं को बच्चों संग सम्मानित किया जाएगा। इसमें सहायक अध्यापिकाएं रेनू और मीनाक्षी का भी सहयोग है।

क्या है उद्देश्य : संयोगिता बताती हैं कि इस पहल के पीछे हमारा उद्देश्य बच्चों को सरलता से और रुचिकर तरीके से विषय वस्तु को सिखाना है। हमें शिक्षण में नए तरीके खोजने की आवश्यकता है। सिखाने का वही तरीका सही और उपयोगी है जिससे बच्चे सरलता और सहजता से सीख सकें।

खिलाड़ियों के लिए यह तरीका अपनाया

तुमको कराना आज खेलों का ज्ञान है। जो इनको सीखे वो बच्चा होशियार है। साएना, सिंधु का तो बैडमिंटन में नाम है। सचिन, विराट, धोनी क्रिकेट की शान है। सरदार सिंह की हॉकी, बुला की तैराकी, तो गीता साक्षी की कुश्ती बेमिसाल है

राष्ट्रीय प्रतीक के लिए यह तरीका

कोई पूछे देश की राजधानी तो नाम नई दिल्ली बतलाए भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों की जब बारी आये खेल हॉकी, फूल कमल, पक्षी मोर कहलाये। इसे बच्चे खेलते कूदते भी रट लेते हैं। जिससे उन्हें आसानी होती है।

जानवरों के नाम और आवाजें

डॉग है कुत्ता, कैट है बिल्ली म्याऊं, म्याऊं, म्याऊं बफैलो है भैंस, काऊ है गाय मों, मों, मों डॉन्की है गधा, मंकी है बंदर, चैटर, चैटर, चैटर से बच्चों को जानवरों के नाम व उनकी आवाजों की पहचान करते हैं।

लाभ ...यदि हम बच्चों में सीखने की ललक पैदा कर देते है तो हमारी अनेक समस्याओं का समाधान स्वत: ही हो जाता है ।

हमारे इस प्रयोग से बच्चों में सीखने के प्रति ललक विकसित करने में सफलता मिली है।

संयोगिता,
प्रधानध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय अदलपुर,
विकास खण्ड–डिलारी,
जनपद–मुरादाबाद।

Easy Way to Read a Sentence

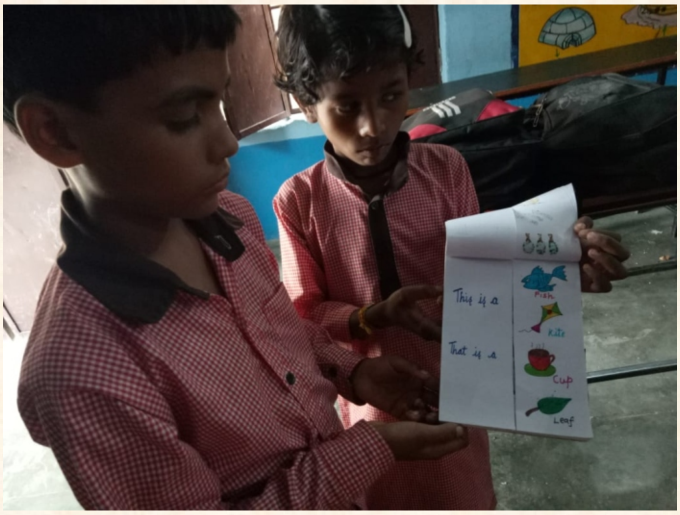

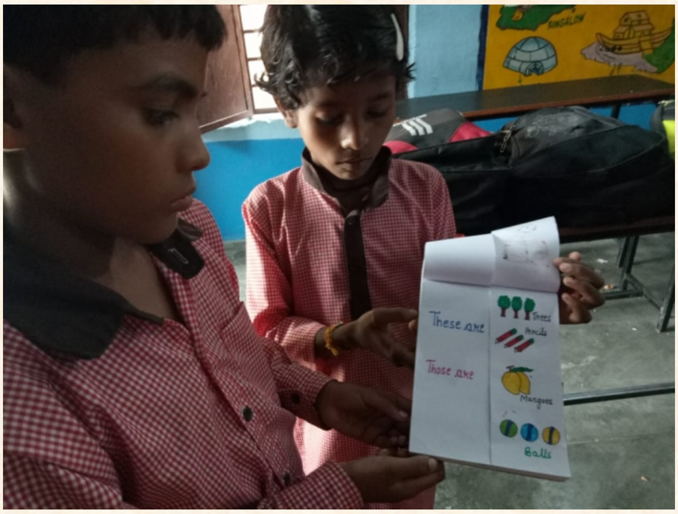

Hello Everyone,Government of U.P. has taken a revolutionary step by upgrading Hindi Medium Basic schools to English Medium schools. I joined basic shiksha vibhag in 2015 as assistant teacher in Saharanpur.After joining the school, the utmost challenge I found was making students to read English fluently and flawlessly. But this challenge was not at all easy one. I observed that students were finding difficulties in reading even simple two letters, three letters or four letters words. In this situation, reading an entire chapter was a real problem for them.I think most scholars would agree that reading is one of the most important skill for educational and professional success. Highlighting the importance of reading comprehension, Doff stated, "Reading is the most important activity in any language class. Not only as a source of information and

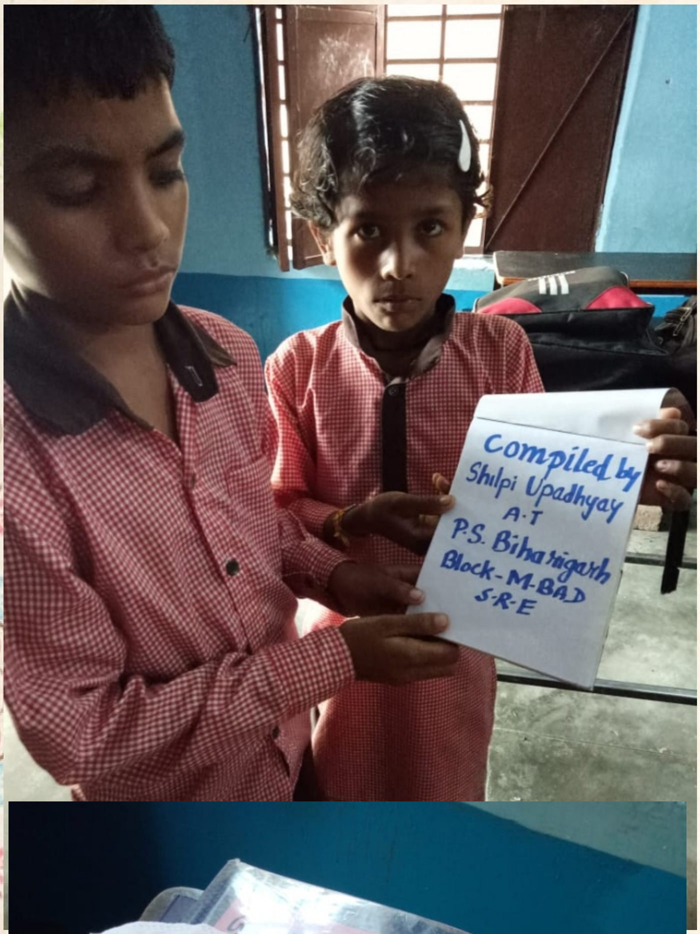

a pleasurable activity but also as a means of consolidating and extending one's ideas which are knowledge of the language.So, I started working on the improvement of English reading skills of my students. I paid more emphasis on making students recognize and learn commonly used two letters, three letters and four letters rhyming or same sound words.TLM made by me helped me a lot to make it a success. Learning simple words with the help of TLM helped my students a lot. It made Learning simple, easier and fun giving to them.Now, the next challenge for me was to make them learn how to read as well as form a sentence. So I created another TLM for this purpose. This TLM of simple sentence has contributed a lot in gathering attention of the students. Finally, I am quite happy and satisfied that my students are taking interest in learning English. It is not at all a tough language for them now.

Shilpi Upadhyay
Assistant Teacher
Model Primary School biharigarh (English Medium)
Block- MujaffrabadDist- Saharanpur

English Medium Diary

English Medium UPS- A Right Step

शिक्षण संवाद

Converting one upper primary school into English medium in each block after successful use of English Medium School in primary school is a commendable effort in order to improve education.After the English medium at the primary level, children had difficulty in getting education in English medium further. This effort by the government has made it easier for children to get education through English to the upper primary level easily.This year, my school has also become an English medium, there is ample enthusiasm among children and parents, but the problem of teachers to teach in English medium school still persists. The English medium school can be successfully operated by addressing this problem.This time, after the school is selected in the English medium, the student strength has also increased substantially from 278 to 342. Which is a positive result, initially, Hindi medium to English medium, there is a lot of difficulty, but these difficulties can be overcome by working out an action plan under a scheme.This step of governance has awakened parents confidence in education in government schools. So, all of us have to strive to make this effort of governance a success, only then will positive results come out.

Jyoti Kumari,
Assistant Teacher,
Upper Primary School Koilara,
Block-Oraai,
District-Bhadohi.

गांधी जी के शैक्षिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

भारतीय शिक्षा को भारतीय बनाने का नारा बुलंद करने वाले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एक युग–पुरुष थे। गांधी जी को अधिकांश लोग एक महान राजनीतिज्ञ ही मानते हैं, किन्तु जीवन एवं समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उनकी देन अमूल्य है। उन्होंने राजनीतिक क्रान्ति के साथ–साथ सामाजिक क्रान्ति को भी जन्म दिया और इसमें शिक्षा को प्रमुख स्थान दिया। वे एक श्रेष्ठ शैक्षिक विचारक थे। गांधी जी शिक्षा को व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार मानते थे और मनुष्य की किसी भी प्रकार की, भौतिक अथवा आध्यात्मिक उन्नति के लिए इसे उतना ही आवश्यक मानते थे जितना बच्चे के समुचित शारीरिक विकास के लिए मां का दूध। गांधी जी प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित देखना चाहते थे किन्तु शिक्षित से उनका तात्पर्य साक्षर अथवा विद्यालय से प्रमाण–पत्र प्राप्त व्यक्ति से नहीं था। उनके विचार में पुस्तकीय ज्ञान तो शिक्षा का एक साधन मात्र है। गांधी जी विश्वविद्यालय से डिग्री प्राप्त किन्तु अनैतिक व्यक्ति से अच्छा बिना पढ़े–लिखे उस मजदूर और किसान को समझते थे जो नैतिक और चरित्रवान हो। स्पष्ट है कि गांधी जी ने शिक्षा द्वारा मनुष्य को चरित्रवान एवं नैतिक बनाने पर बल दिया है।

गांधी जी शिक्षा को मनुष्य के शरीर, मन, हृदय और आत्मा के विकास का साधन मानते थे। उन्होंने 3R (Reading, Writing and Arithmetic) की शिक्षा को 3H (Hand, Head and Heart) की शिक्षा में बदल दिया और कहा कि शिक्षा का कार्य मनुष्य को केवल पढ़ना, लिखना और गणित सिखाना ही नहीं है अपितु उसके हाथ, मस्तिष्क और हृदय का विकास करना भी है। शिक्षा ऐसी हो जो मनुष्य को स्वावलंबी बनाए जिससे वह देश को मजबूत बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सके। गांधी जी के शिक्षा संबंधी प्रमुख आधारभूत सिद्धांत यथा निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा, मातृभाषा में शिक्षा, बालक में मानवीय गुणों का विकास, चारित्रिक व नैतिक दृढ़ता, हस्त–कौशलों का प्रशिक्षण व नवयुवकों को बेरोजगारी से मुक्त कराने वाली शिक्षा, आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। वे कहते थे कि जो शिक्षा चित्त की शुद्धि न करे, जीविकोपार्जन का साधन न बने तथा स्वतंत्र रहने का हौसला व सामर्थ्य न उपजाए, उस शिक्षा में चाहे जितनी भी जानकारी का खजाना, तार्किक

कुशलता और भाषा–पांडित्य मौजूद हो वह सच्ची शिक्षा नहीं कही जा सकती। गांधी जी शिक्षा द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास चाहते थे क्योंकि सर्वांगीण विकास होने पर ही बालक पूर्ण मानव कहलाने योग्य होता है। उनके अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम बालक के जीवन की समस्याओं से संबंधित होना चाहिए। शिक्षण विधि के संदर्भ में उनका विचार था कि क्रिया द्वारा स्वयं सीखना और विषयों को सानुबंधित करके पढ़ाना अधिक उपयुक्त हैं। उनके विचार में बालक को अधिक से अधिक स्वतंत्रता देकर उसे स्वयं सीखने हेतु प्रेरित करना चाहिए। शिक्षक के विषय में गांधी जी का विचार है कि एक शिक्षक आदर्श तभी हो सकता है जब वह शिक्षण व्यवसाय को सेवा कार्य के रूप में स्वीकार्य करे। उसे बच्चों के पिता, मित्र, सहयोगी और पथ–प्रदर्शक के रूप में कार्य करना होता है इसलिए उसे सहिष्णु, उदारचेता एवं धैर्यवान होना चाहिए।

गांधी जी के उपरोक्त विचार निश्चित रूप से भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक मजबूत आधार प्रदान करने वाले हैं किन्तु उनके शिक्षा संबंधी विचारों को हम अपनी वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था से जोड़ने में असफल रहे हैं। आज भले ही हमने गांधी जी को राष्ट्रपिता का दर्जा दे दिया हो , भारतीय नोटों पर उनकी तस्वीर छाप दी हो, 2 अक्टूबर को राष्ट्रीय अवकाश घोषित कर दिया हो लेकिन भारत को भारत जैसा बनाए रखने की उनकी जो शिक्षा योजना थी उससे हम कोसों दूर होते गए हैं। भारत की पहचान भारत के रूप में बनी रहे इसके लिए आज गांधी जी के जीवन दर्शन और उनके शैक्षिक विचारों पर अमल करने की महती आवश्यकता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा दिखाने वाले ऐसे युग–पुरुष को हमारा शत–शत् नमन।

सर्वेश तिवारी,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय झौवा,
विकास क्षेत्र औराई,
जनपद भदोही

सद्विचार

सरदार पटेल

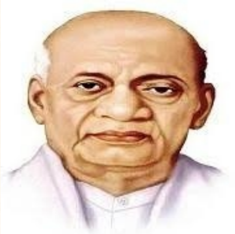

शिक्षण संवाद

समय में जरा पीछे चलते है। 15 अगस्त सन 1947 को 200 वर्षों की गुलामी के पश्चात आजादी का सूर्य उदय हुआ। परन्तु आजादी के साथ हमें मिला बँटवारे का दर्द एवं 562 बिखरी हुई रियासतों के साथ आधा–अधूरा भारत। ऐसे दुष्कर समय में भारत के प्रथम गृहमंत्री व उपप्रधानमंत्री के पद का दायित्व निर्वहन कर रहे लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के समक्ष इन रियासतों के एकीकरण की चुनौती पहाड़ बनकर खड़ी थी।

31 अक्टूबर सन 1857 को जन्मे एवं महात्मा गाँधी के बहुत करीबी सरदार पटेल जनमत की एक सशक्त आवाज थे। वल्लभभाई ने खेड़ा व बारडोली के जनांदोलनों का सफल नेतृत्व कर सरदार की उपाधि प्राप्त की एवं स्वतंत्रता प्राप्ति के पथ पर पग–पग अग्रसर हो आजादी के नायकों की प्रथम पंक्ति तक पहुँचे। सरदार पटेल के जीवन से जुड़े बहुत से प्रसंग जैसे कि बचपन में आँख के पास फोड़ा हो जाने पर स्वयं ही गर्म सरिया से दाग लेना व वकालत करते समय पत्नी के निधन की सूचना प्राप्त होने पर भी अपने मुवक्किल की बेगुनाही के लिए केस लड़ते रहना या भारतीय लेजिस्लेटिक असेंबली के अध्यक्ष रहते हुए एक अंग्रेज दम्पत्ति के द्वारा भूलवश उन्हें चपरासी समझ लेने पर असेंबली घुमाना उनके सरलता, सहजता, सहनशक्ति, दृढ़ता, दूरदर्शिता, कर्तव्यनिष्ठता आदि गुणों को दर्शाते हैं।

भारत के वर्तमान मानचित्र व स्वरूप के शिल्पकार पटेल ने स्वतन्त्रता के बाद समस्त अलग–थलग रियासतों को एक सूत्र में पिरोने का अविश्वसनीय कार्य बहुत ही कम समय व बिना रक्त की एक बूँद बहाये पूर्ण किया। जूनागढ़ और हैदराबाद जैसी अलग विचारधारा वाली रियासतों को भी अपनी दूरदर्शिता व दृढता से भारत के समक्ष झुकने पर विवश कर दिया।

हालांकि स्वतंत्रता उपरांत सरदार पटेल बहुत अधिक समय तक देश को प्रगति की दिशा नहीं दिखा पाए और 15 दिसंबर सन 1950 को पंचतत्व में विलीन हो गये। परन्तु इस कम समय में उनके द्वारा किये गये रियासती एकीकरण के कार्य ने उन्हें लौहपुरुष की छवि प्रदान की एवं इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में सदैव के लिए अमर कर दिया। लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के व्यक्तित्व व कद के अनुसार ही भारत सरकार ने सन 1991 में उन्हें भारत रत्न व सन 2018 में विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा के रूप में सम्मानित किया। देश की एकता को साधने के कारण सरदार पटेल का जन्मदिवस 31 अक्टूबर राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है।।

राजीव कुमार गुर्जर,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय बहादुरपुर राजपूत,
विकास खण्ड–कुन्दरकी
जनपद–मुरादाबाद।

चतुर बाज

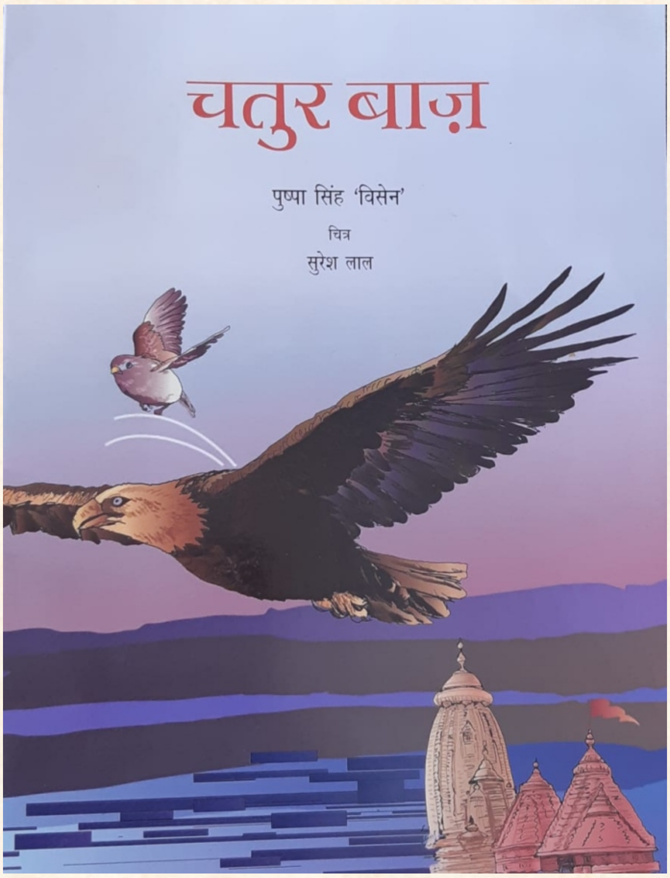

यदि कम समय में बहुत कुछ सीखना है तो उसका सबसे सस्ता और सर्वसुलभ साधन पुस्तकें ही हैं। पाठ्यक्रम से इतर पुस्तकें पढ़ने का लाभ यह होता है कि हम जीवन के विभिन्न आयामों को समझ पाते हैं। बाल साहित्य बच्चों पर बहुत ही सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आज भी बाल साहित्य के अंतर्गत ऐसी ही एक पुस्तक चतुर बाज की चर्चा करेंगे।

चतुर बाज पुष्पा सिंह 'बिसेन' द्वारा रचित और सुरेश लाल के चित्रों से सजी एक ऐसी पुस्तक है जो एक महत्वपूर्ण सीख देती है। इस पुस्तक का प्रकाशन NBT INDIA ने किया है और मूल्य है 50 रुपए मात्र।

इस पुस्तक में कहानी है गौरैया के एक जोड़े उनके पाँच बच्चों और एक दुष्ट बाज की। गौरैया का जोड़ा एक पीपल के पेड़ पर रहता है। वे प्रतिदिन अपने बच्चों के लिए दाना एकत्र करने जाते थे। एक शाम मादा गौरैया तो कोटर में लौट आयी। लेकिन नर गौरैया नहीं आया था। हाँ कोटर के बाहर एक चतुर बाज अवश्य बैठा था। उस बाज ने चिकनी–चुपड़ी बातें करके मादा गौरैया को विश्वास में ले लिया फिर बड़ी चालाकी से उसके चार बच्चों को खा गया। अब ऐसे में गौरैया क्या बाज की चालें समझ पाएगी या स्वयं को उससे बचा पाएगी? यह सब जानने के लिए आपको चतुर बाज पढ़नी ही पड़ेगी। तो अबकी चतुर बाज को ला रहे हैं न अपने पुस्तकालय की शान बनाने?

बरखा रानी

बरखा रानी आओ ना,
अब हमको तरसाओ ना।
धरती प्यासी, अम्बर प्यासा
आकर प्यास बुझाओ ना।
पेड़ उगाये, बीज भी बोये
ऐसे इन्हें सुखाओ ना।
शपथ उठाते पेड़ ना काटें
अब तो मान भी जाओ ना।
बादल बरसे, बिजली चमकी
अब तो बरस भी जाओ ना।
जंगल सूखे, बाग भी सूखे
कुछ तो रहम दिखाओ ना।
गड्ढे खोदे, टैंक बनाये
देखो इन्हें भर जाओ ना।
आज नहा लें हम जी भर के
खुलकर बरस भी जाओ ना।
सुन लो पुकार अपने बच्चों की,
ऐसे सुध बिसराओ ना
बरखा रानी आओ ना
अब हमको तरसाओ ना।

नीलम गुप्ता,
सहायक अध्यापक,
मॉ. इ. मा. कम्पोजिट स्कूल गोयना,
विकास खण्ड व जनपद हापुड़।

ये अधिकार रखते हैं

बड़ी मासूम चाहत हैं,,
अभावों के घरौंदों की।
मगर हो आसमां इनका,
ये अधिकार रखतें है।।

मिला है पंक में जीवन,
खता इसमें नहीं इनकी।
बने पंकज खिलें जग में,
ये अधिकार रखते हैं।।

बनेगा कल इन्हीं में से,,
कोई इस देश का गौरव।
मिले शिक्षा सही इनको,
ये अधिकार रखते हैं।।

शिक्षक हम अगर इनके,
पढ़ाना धर्म हमारा है।
कोई एहसाँ नहीं इन पर,
ये अधिकार रखते हैं।।

अर्षिता सैनी,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय जोगीपुर,
विकास खण्ड–बावन,
जनपद–हरदोई।

कच्ची मिट्टी

शिक्षण संवाद

आज 22 फरवरी है आज सोनिया फिर स्कूल नहीं आयी। कक्षा 8 में है सोनिया, जल्दी ही परीक्षा होने वाली है। मैडम बहुत परेशान हो गईं पूछने लगीं बच्चों तुम्हें पता है सोनिया कहाँ है, क्या हाल है? मोनिका बोली–"मैडम मैं जानती हूँ कहाँ रहती है।"

मैडम ने कहा–"चलो मैं भी चलती हूँ। आज पता लगाती हूँ क्या समस्या है?" मैडम और मोनिका सोनिया के घर चल पड़े। घर के बाहर ही सोनिया के पिता चाक चलाते हुए मिल गए। मैडम को देखकर चौंक गए बोले–"अरे! मैडम जी आप यहाँ?"

मैडम बोलीं–"जी। कहाँ है सोनिया।"

वे बोले–"अरे मैडम जी वह तो अंदर है खाना बना रही है।"

मैडम बोलीं–"उसकी परीक्षा आने वाली है पूरे 22 दिन से वह अनुपस्थित है स्कूल में। मैंने समझा बीमार है। चलो मैं ही हाल चाल ले आऊँ।"

इतने में सोनिया की बुआ हँसते हुए बाहर आयी। कहने लगी–"अरे! मैडम कुछ नहीं हुआ है सोनिया तो बिल्कुल ठीक है और अब तो 2 महीने में उसकी शादी होने जा रही है, आप मुँह मीठा कीजिए।"

अब चौंकने की बारी मैडम की थी। अभी तो सोनिया 16 साल की भी पूरी नहीं है। "तो क्या हुआ मैडम जी अच्छा लड़का मिल गया तो भैया ने शादी तय कर दी और फिर भैया की भी तो शादी 14 साल में ही हो गयी थी।"

"हाँ, हो गयी थी और फिर क्या हुआ सोनिया की माँ को यह क्यों नहीं बता रही हो?"–मैडम बोलीं।

"अरे, वह तो भगवान को ही नहीं मंजूर था नहीं तो कोई इतनी जल्दी मरता है क्या? यह नियति की बात नहीं है, यह समझदारी की बात होती है आप बताइए।"

"सोनिया के पिताजी यह जो मिट्टी के बर्तन बना रहे हैं आप मुझे बेचेंगे।" "अभी, कहाँ मैडम जी अभी तो इसे आग में पूरी तरह पकाना है तब यह अच्छे से बनेंगे अगर आप अभी से ले जाएँगी तो ये किसी काम के नहीं रहेंगे।"

"भाई साहब मिट्टी से बने बर्तनों के बारे में इतनी परख रखते हैं तो अपनी फूल सी बच्ची के बारे में भी तो समझ रखिए उसकी शादी अगर आप समय से पहले करेंगे तो वह भी आपके इन्हीं कच्ची मिट्टी से बने बर्तनों की तरह बिखर जाएगी बीमार रहेगी ना घर सँभाल पाएगी, न बच्चे। अभी उसे पढ़ने दीजिए कम से कम 18 वर्ष का हो जाने दीजिए।"

"लेकिन मैडम बहुत अच्छा लड़का हाथ लगा है अगर ना कर दिया तो कहीं शादी ना टूट जाए।"

"ऐसा कुछ नहीं है भाईसाहब अगर लड़का अच्छा है तो परिवार वाले भी अच्छे होंगे। जब आप उन्हें यह बात समझाएँगे कि सोनिया की उम्र भी कम है अभी उसे पढ़ने दीजिए शादी दो साल बाद कीजिए, तो वह जरूर समझ जाएँगे क्योंकि कोई भी अपने परिवार का बुरा नहीं चाहेगा।क्या वह चाहेंगे कि सोनिया शादी होकर जाए तो हमेशा बीमार रहे।"

"नहीं, मैडम ऐसा तो कोई नहीं चाहेगा।"

"तो बस आप अपने फैसले से लड़के के घरवालों को अवगत करा दीजिए। देखिए लड़की स्वस्थ रहेगी खुश रहेगी, तभी उसका परिवार भी मुस्कुराएगा खुश रहेगा।"

"समझ गए मैडम जी हम आपकी बात हमारी सोनिया अभी कच्ची मिट्टी की तरह है मैं अभी उसे पढ़ाऊँगा और उसका ब्याह उचित समय पर ही करूँगा।"

"यह हुई ना बात।"—खुश होकर मैडम बोलीं। "आज मैंने एक बेटी को और उसकी मुस्कान को बचा लिया है भगवान ऐसे ही हर बेटी को उसका अधिकार दे दे ऐसी मेरी मनोकामना है।"

वन्दना श्रीवास्तव,

मॉडल विद्यालय अन्दावां,

विकास खण्ड—बहादुरपुर,

जनपद—प्रयागराज।

माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट

स्वच्छ भारत अभियान

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/09/blog-post_77.html

शिक्षण संवाद

प्रिय बापू का सपना था,
भारत को स्वस्थ रखना था।।
स्वच्छ भारत अभियान चलाकर,
पूर्ण करें सपने को हाथ बँटाकर।।
साफ करें हर कोना — कोना,
कूड़ा मत फेंको ये बात दिल में है संजोना।।

स्कूल और गलियों की भी,
साफ सफाई रखनी है।।
निज आँगन की तरह,
ये भी अपनी समझनी हैं।।

हर घर में हो शौचालय,
खुले में न शौच जाना है।।
घर — घर जाकर माँ बहिनों को,
हमको तो समझाना है।।

आओ मिलकर हाथ बँटाएँ,
इस सुंदर अभियान में।।
बच्चे बूढ़े और जवान,
कोई न छूटे इस दरमियान में।।

बापू जी के सपने को,
पूरा करना देश का काम।।
बच्चे और बड़ों को चलाना है,
स्वच्छ भारत अभियान।।

रचयिता
इन्दु पंवार,
प्रधानाध्यापक,
रा. प्राथमिक विद्यालय गिरगाँव,
जनपद–पौड़ी गढ़वाल,
उत्तराखण्ड।

तुम इतनी शक्ति कहाँ से लाती हो
(सभी शिक्षिकाओं को समर्पित)

हे शिक्षिका! तुम नित विद्यालय जाती हो,
बच्चों को नयी–नयी बात सिखाती हो,
बेटे का भी लालन–पालन,
बच्चों का भी पठन–पाठन,
बिन रुके पढ़ाती जाती हो,
तुम इतनी शक्ति कहाँ से लाती हो,

जब तुम विद्यालय जाती हो,
एक नया इतिहास रच जाती हो,
बच्चों पर सर्वस्व लुटाकर,
हर रोज नया भारत बनाती हो,
तुम इतनी शक्ति कहाँ से लाती हो,
तुम देवी हो कई–कई किरदार निभाती हो,
माँ, पत्नी, बहू, शिक्षिका हर रूप में ढल जाती हो,
बच्चों पर जी जान लगाकर हर ज्ञान उन्हें सिखाती हो,
बीच–बीच में माँ बनकर ममता का पाठ पढ़ाती हो,
तुम इतनी शक्ति कहाँ से लाती हो,
ए.सी., कूलर छोड़कर बच्चों के रंग में रंग जाती हो,
जहाँ नहीं है कोई उजाला,
वहाँ विद्या दीप जलती हो,
नारी नहीं, शक्ति हूँ, यह सन्देश बताती हो,
राष्ट्र निर्माता बनकर, नयी मिसाल बनाती हो,
तुम इतनी शक्ति कहाँ से लाती हो,
ससुराल में गृहणी बन सबका दिल बहलाती हो,
फिर विद्यालय जाकर ज्ञान–गंगा बन बह जाती हो,
नहाना, खाना, उठना, बैठना हर संस्कार सिखाती हो,
हे शिक्षिका! बस इतना बतला दो,
तुम इतनी शक्ति कहाँ से लाती हो,
रूढ़िवादी जंजीरों को तोड़ आगे बढ़ जाती हो,
समाज की सारी टीका–टिप्पणी खुद ही सह जाती हो,
कभी माँ, कभी दुर्गा, कभी रानी बन जालिमों के मस्तक झुकवाती हो,
तुम पुरुषों से आगे बढ़ अपना लोहा मनवाती हो,
तुम इतनी शक्ति कहाँ से लाती हो,

मौहम्मदआरिफ,
सहायकअध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय मंडावली,
विकास खण्ड–नजीबाबाद,
जनपद–बिजनौर।

■ बात शिक्षिकाओं की

पढ़ी लिखी लड़की, रोशनी घर की

शिक्षण संवाद

किसी भी देश को विकसित होने के लिए उस देश की महिलाओं का शिक्षा में योगदान अति महत्वपूर्ण है चाहें फिर वह क्षेत्र महिला(प्रौढ़– शिक्षा) शिक्षा हो या बालिका शिक्षा हो।

एक महिला शिक्षिका होने के नाते देश की शिक्षण व्यवस्था में योगदान का यह सुअवसर मुझे भी मिला।

मेरा विद्यालय उच्च प्राथमिक विद्यालय है। अतः छात्र–छात्राओं को ज्ञान के द्वारा उनके परिवेश से जोड़ना और जागरूक करना अत्यधिक महत्वपूर्ण था। छात्र–छात्राओं का प्रथम विद्यालय उनका घर होता है तो इसकी शुरुआत घर से किये जाने पर अत्यधिक जोर रहा। जब घर की माताएँ जागरूक होंगी तो उनके पाल्य भी जागरूक होंगे।

माताओं के बाद शिक्षार्थियों मे जागरूकता का सैलाब देखने को मिला। बालिकाओं को अपनी सुरक्षा, अधिकार, सामाजिक जागरूकता के लिये मैंने उनके ज्ञान को और सृजनात्मक एवं उपयोगी धारा से जोड़ा एवम विद्यालय में ही नाटक, खेल गतिविधियाँ, निबंध–लेखन, गायन, कविता–रचना आदि का संचालन सहायक रहा। आज विद्यालय के सभी विद्यार्थी खासकर बालिकाएँ जब अपनी सुरक्षा और अधिकार के बारे में अपने परिवार के साथ–साथ घर व गाँव में भी जागरूक करती हैं तो बड़ा हर्ष महसूस होता है। उन्हें 1090, 1098 एवं डायल 112 की जानकारी के साथ–साथ अपने अधिकारों की बात करते देख लगता है कि एक महिला शिक्षिका होने के कर्तव्य को मैंने पूर्ण किया और आत्मसंतुष्टि का अनुभव होता है।

बालिकाओं से संबधित संवेदनशील विषयों पर भी शी कोर्नर के माध्यम से उनके साथ चर्चा की जाती है और उनके विचार और समस्याओं को जानकार उनके समाधान का प्रयास किया जाता है।

किशोरावस्था के छात्र छात्राओं की बात सुनकर उन्हें सही– गलत समझाना थोड़ा मुश्किल अवश्य है लेकिन यह एक महत्वपूर्ण कार्य है।

एक शिक्षिका की भूमिका में यह कार्य आगे भी जारी रहे ऐसा प्रयास हमेशा रहेगा।

सुनीता पुष्कर
इंचार्ज प्रधानाध्यापिका,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अजनौठी, विकास खण्ड–छाता,
जनपद–मथुरा।

प्राणायाम

शिक्षण संवाद

प्राणायाम शब्द संस्कृत व्याकरण के दो शब्दों 'प्राण' और 'आयाम' से मिलकर बना है। प्राण का अर्थ ऊर्जा अथवा जीवनी शक्ति है तथा आयाम का अर्थ ऊर्जा को नियंत्रित करना है।प्राणायाम के अर्थ में प्राणायाम का तात्पर्य एक ऐसी क्रिया से है जिसके द्वारा प्राण का प्रसार, विस्तार किया जाता है तथा उसे नियंत्रण में भी रखा जाता है। प्राण का उचित नियंत्रण ही प्राणायाम है।

प्राणायाम करते समय मन शांत एवं प्रसन्न होना चाहिए। प्राणायाम करने के लिए श्वास अंदर लेना पूरक, श्वास को अंदर रोकना कुम्भक, श्वास को बाहर फेंकना रेचक कहलाता है।प्राणायाम करते समय गर्दन, मेरुदंड व कमर को सदा सीधा रखकर बैठना चाहिए तभी इसका अभ्यास यथाविधि व फलदायी होता है।

आज दो प्राणायाम से अवगत कराते हैं, जो हमारे लिए बहुत लाभकारी हैं।

1. अनुलोम विलोम –

विधि –

सुखासन या पद्मासन में बैठें। कमर व गर्दन सीधी रखें। प्राणमुद्रा (अँगूठे की जड़ में पहली दो उँगलियाँ रखते हैं और तीसरी उँगुली व अँगूठे का प्रयोग करते हैं)के द्वारा बायीं नासिका से श्वांस धीरे–धीरे अन्दर लें। श्वांस यथाशक्ति रोकने के पश्चात दायीं नासिका से श्वांस धीरे–धीरे बाहर निकालें।

पुनः दायीं नासिका से श्वांस लें व यथाशक्ति रोकने के पश्चात बायीं नासिका से श्वांस धीरे–धीरे बाहर निकालें। इस क्रिया को जल्दबाजी में नहीं अपितु धीरे–धीरे करें। इस क्रिया को 10 से 15 मिनट तक करें।

लाभ –

शरीर की सम्पूर्ण नस नाड़ियाँ शुद्ध होती हैं। शरीर तेजस्वी व फुर्तीला बनता है। रक्त शुद्ध होता है।

मन एकाग्र होता है। मानसिक तनाव दूर होता है व फेफड़े मजबूत बनते हैं।

सावधानियाँ –

श्वांस की गति सहज हो। कुंभक को अधिक समय तक न करें। यह प्राणायाम खाली पेट करें।

2. भ्रामरी प्राणायाम –

सुखासन या पद्मासन में बैठें। कमर व गर्दन सीधी रखें। नाक से गहरी श्वांस लेकर दोनों हाथों के अँगूठों से दोनों कानों को इस तरह बन्द करें कि बाहर की कोई ध्वनि सुनाई न दे, तर्जनी उँगलियों को माथे पर, मध्यमा उँगलियों को पलकों पर व अनामिका उँगलियों को नाक के दोनों ओर व कनिष्ठा उँगलियों को होंठो पर रखकर धीरे–धीरे ओम शब्द का उच्चारण करते हुए मधुर आवाज में कंठ से भौंरे के समान गुंजन करें व श्वांस धीरे–धीरे बाहर निकालें। पूरा श्वांस छोड़ते समय गुंजन की मधुर ध्वनि अपने आप बन्द होगी। इस प्राणायाम को तीन से पाँच बार करें।

लाभ –

इस प्राणायाम का मुख्य उद्देश्य स्मरण शक्ति व मानसिक शक्ति को बढ़ाना है। इस प्राणायाम को करने से फेफड़ों को अद्भुत शक्ति प्राप्त होती है। इसमें गुंजन करते करते ॐकार व अन्य प्रकार के दिव्य शब्द भी सुनाई देते हैं जिससे मन को शांति मिलती है।मस्तिष्क में विशेष कम्पन होने से मस्तिष्क की सक्रियता बढ़ती है। यह प्राणायाम विद्यार्थियों की एकाग्रता को बढ़ाता है। नींद न आने की बीमारी में भी इस प्राणायाम से राहत मिलती है।

सावधानी –

कानों को बन्द करने के लिए अधिक दबाव न डालें। आँखों पर भी दबाव न डालें व पलकों पर उँगलियाँ रखें।भ्रामरी प्राणायाम को अनुलोम विलोम प्राणायाम के बाद करें।

शिल्पी गोयल,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय निजामपुर,
विकास खण्ड–सिकन्दराबाद, जिला–बुलंदशहर।

कैरम
(अ इनडोर गेम)

शिक्षण संवाद

कैरम यानि बच्चे हों या बड़े सभी का सबसे पसंदीदा गेम। शायद ही कोई ऐसा होगा जिसे कैरम खेलना पसंद ना हो। बेहद ही आसान ये खेल रोमांच से भी भरा है जिसे बच्चे, बूढ़े, जवान, महिलाएँ सभी खेल सकते है। इस खेल की सबसे बड़ी खासियत यही है कि ये मनोरंजन के लिए खेला जाता है और इसे खेलने का उद्देश्य स्वास्थ्य से जुड़ा नहीं है। ना ही इसे खेलने के लिए किसी लंबे चौड़े मैदान की जरूरत है। यह एक इनडोर गेम है। इसे घर के किसी भी हिस्से में बैठकर खेला जा सकता है। शायद यही कारण है कि ये खेल इतना ज्यादा लोकप्रिय है। लेकिन इस खेल के भी कुछ नियम हैं–

1. कैरम बोर्ड – इस खेल में प्लाइवुड या हार्डबोर्ड का बना बोर्ड होता है जो वर्गाकार होता है। इसी के ऊपर सभी गोटियाँ डालकर ये खेल खेला जाता है।

2. स्ट्राइकर लाइन – बोर्ड के चारों तरफ लंबी पट्टी खींची जाती है। हर पट्टी की लंबाई 47 से.मी. व चौड़ाई 3 से.मी. होती है। इन्ही पट्टियों को स्ट्राइकर लाइन कहा जाता है जिस पर स्ट्राइक रखकर ही गोटियों को हिट किया जाता है।

3.स्ट्राइकर – गोटियों को हिट करने के लिए स्ट्राइकर का इस्तेमाल किया जाता है।

4.तीर का निशान – कैरम बोर्ड में जहाँ भी तीर का निशान होता है उसका मतलब ये होता है कि खेलने वाले का हाथ या उँगलियाँ इन तीरों पर टच ना हों।

5.गोटियाँ – इस खेल में दो रंग की गोटियाँ इस्तेमाल में लाई जाती हैं। एक काली व दूसरी पीली। ये गोटियाँ वृत्ताकार होती हैं। दोनों तरह की गोटियों की संख्या 9–9 होती हैं व इसके अतिरिक्त एक गोटी लाल रंग की होती है, जिसे रानी कहा जाता है, खेल में प्रत्येक गोटी प्राप्त करने पर एक अंक मिलता है, किन्तु रानी गोटी प्राप्त करने पर खिलाड़ी को पाँच अंक मिलते हैं। इसीलिए प्रत्येक खिलाड़ी की यही इच्छा होती है कि रानी गोटी को जल्द से जल्द सबसे पहले हासिल किया जाए।

कैरम बोर्ड खेलने के नियम–

स्ट्राइकर को स्ट्राइकर लाइन पर रखा जाता है, लेकिन नियम ये है कि स्ट्राइकर दोनों रेखाओं से स्पर्श करता हुआ रखा जाए। अगर स्ट्राइकर एक ही रेखा को छू रहा हो तो वो फाउल माना जाता है।

स्ट्राइकर हिट करते समय हाथ या उँगली का कोई हिस्सा बोर्ड को नहीं छूना चाहिए। वरना फाउल होता है।

स्ट्राइकर हिट करते समय उँगली अथवा हाथ का कोई हिस्सा तीर के निशान से बाहर भी नहीं जाना चाहिए। अगर स्ट्राइकर हिट करने के दौरान स्ट्राइकर गोटों वाले छेद में चला जाए तो जीती हुई गोटी में से दो गोटी वापस बोर्ड में रखनी पड़ती है।

यदि खेल के अंत में बोर्ड पर तीन गोटी रह जाती है– एक काली, एक पीली और लाल तो इस स्थिति में हर खिलाड़ी को पहले लाल गोटी प्राप्त करना जरूरी होता है। लाल गोटी के बाद अगर काली या पीली गोटी भी वह प्राप्त कर लेता है तो रानी उसकी हो जाती है अन्यथा लाल गोटी वापस रखनी पड़ती है।

अगर खेल के दौरान उँगलियाँ किसी भी गोटी से टच हो जाती हैं तो उस खिलाड़ी को अपनी एक गोटी खेल में रखनी होती है।

अगर दोनों खिलाड़ी के या टीमों के 27–27 अंक हो जाते हैं तो गेम को 31 अंकों तक बढ़ा दिया जाता है।

किसी खिलाड़ी अथवा टीम के 24 अंक होने पर वह रानी से 5 अंक प्राप्त नहीं कर सकता। यदि वह रानी लेकर जीतता है तो भी उसे विरोधी की बोर्ड पर बची गोटों के अंक मिलते हैं।

रीनू पाल,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय दिलावलपुर,
विकास खण्ड–देवमई,
जनपद–फतेहपुर।

Seven Shades Of Learning Science

Series of Classroom Experiments –Reach to Each

"ज्ञान का यान–विज्ञान"

शिक्षण संवाद

प्रिय मित्रों,

मानव अपने जन्म से लेकर ताउम्र जब भी कभी कुछ नया देखता है तो उसके अन्दर एकाएक उस विषय वस्तु की पूरी जानकारी इकट्ठा करने को लेकर जिज्ञासा बढ़ जाती है। देखा जाए तो बचपन में जिज्ञासा का स्तर अधिकतम होता है। इसी दौरान बच्चे अपने अभिवावकों और शिक्षकों से सबसे ज्यादा प्रश्न भी करते हैं। बदले में अभिभावक उन प्रश्नों के उत्तरों को अक्सर यह कहकर टाल देते हैं की अभी व्यस्त हूँ, बाद में आना, अपने अध्यापक से पूछ लेना आदि, वजह चाहे जो भी हो। दूसरी ओर विद्यालय में अक्सर शिक्षक भी यही बोलते हैं कि शांत हो जाओ। पहले इसे लिखो और याद करो। परीक्षा में ये काम आएगा।

गौर किया जाए तो बच्चों द्वारा पूछे गए विज्ञान के ही आधारभूत प्रश्न थे जो कि विषय रूपी न होकर सीखने की सामान्य प्रक्रिया का एक हिस्सा थे।

एक प्रश्न याद आता है जो बचपन में आता था कि अगर पृथ्वी घूमती है तो मेरे घर के सामने वाला घर क्यूँ नहीं घूमता है? दूसरा प्रश्न खुले आसमान को रात्रि में निहारते वक्त आया, कि ये सफेद दूधिया रास्ता कैसा बना है और उत्तर मिला कि यह इंद्र देव के "एरावत" हाथी के गुजरने का रास्ता है, बजाय यह बताने के कि यह हमारी आकाश गंगा मिल्की वे की एक स्पाइरल (सर्पिलाकार) भुजा है जिसमें असंख्य तारे हैं। आज का हाल यह है कि न तो आकाश गंगा के दर्शन हो रहे हैं और न ही उस खुले आसमान के। अब तो सभी सर झुका के जी रहे हैं और अपनी सोच को एक मोबाइल में कैद कर रखा है।

उन प्रश्नों के सही से उत्तर देकर बच्चों की संवेदनाओं को आवेशित भी किया जा सकता था। लेकिन उन्हीं प्रश्नों को प्रक्रिया से विलग विषयरूपी चोंगा पहना दिया गया। समय के साथ बच्चों में विज्ञान विषय के प्रति अरुचि हो गयी। नीरसता के साथ यही युवा भविष्य के शिक्षक भी बन गए और अज्ञानता का यह सिलसिला अनवरत चलता रहा।
आज की सबसे बड़ी जरूरत बच्चों में विज्ञान को विषय नहीं बल्कि प्रक्रिया के रूप में परोसना और

नवाचार को लेकर प्रेरित करना है। विज्ञान शिक्षण को रोचक बनाने के लिए शिक्षकों को कक्षा–कक्ष में छोटे–छोटे मजेदार प्रयोग करके दिखाने पर जोर देना होगा। जिन प्रयोगों को करने के लिए हम अपने बचपन में वंचित रहे उन्हीं प्रयोगों को खेल–खेल में गतिविधि का नाम देकर विद्यार्थियों में प्रकृति के साथ तालमेल बढ़ाने की आवश्यकता है। वहीं दूसरे पहलू पर शिक्षकों को समय–समय पर स्वयं को विभिन्न प्रायोगिक कार्यशालाओं के माध्यम से प्रशिक्षित रखना होगा जिससे शिक्षण की एक नयी परम्परा का चलन शुरू हो सके और बदलाव की लहर से समूचे देश का विज्ञानमयी विकास हो सके।

इसी कड़ी में अभिभावकों को भी जागरूक करना जरूरी है, यह कि बच्चा बचपन से खोजी / वैज्ञानिक प्रवृति का होता है और अक्सर अभिभावक उसे वात्सल्यता के कारण / असुरक्षा के भय से चीजों को करने से रोकते हैं। आवश्यकता यह है कि अभिभावक उन गतिविधियों को बच्चे को करने में मदद करें जिससे बच्चे का प्रकृति के साथ अटूट रिश्ता बन सके और उसका सर्वांगीण विकास हो सके।

इस सीरीज के प्रयोगों को कक्षा 4 के बच्चों से लेकर किसी भी स्तर के बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों के समक्ष रोचकता से परोसा जा सकता है और कोई भी बड़ी सरलता से इन्हें कर सकता है सुविधा के लिए इन प्रयोगों से सम्बंधित प्रत्येक का वीडियो मिशन शिक्षण संवाद के फेसबुक पेज व सभी समूहों में पत्रिका के प्रकाशित होने के दो दिन बाद अपलोड कर दिया जाएगा।

प्रयोग से सम्बंधित विस्तृत चर्चा, सवाल, Extention of experiment को भी सभी सोशल प्लेटफार्म्स पर प्रेषित करा जाएगा।

हो सकता है कि कुछ प्रयोग आपने पहले ही देखे हों और करे हों। ऐसे में धैर्य और विश्वास बनाये रखें। आप सभी से विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि प्रत्येक प्रयोग में कुछ ही नहीं बहुत कुछ नया होगा चाहे वो content हो या प्रस्तुतीकरण।

विज्ञान संचार की इस बयार में मुख्य रूप से समाज के तीन अहम स्तम्भ बच्चा, अभिभावक व शिक्षक का आपसी तालमेल बनाना उद्देश्य है जिससे ये तीनों एक दूसरे के पूरक बन सकें।

निश्चित रूप से विज्ञान शिक्षण की गुणवत्ता एवं उपयोगिता बढ़ाने में यह प्रयास मील का पत्थर साबित होगा।

मनीष कुमार,
राज्य अध्यापक पुरस्कार सम्मानित,
सहायक अध्यापक / राष्ट्रीय विज्ञान संचारक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय शिवगंज,
विकास खण्ड सहार,
जनपद औरैया।
Email- manishyadav1407@gmail.com

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-फेसबुक पेजः https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- फेसबुक समूहः https://www.facebook.com/groups/118010865464649/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad

5-यू-ट्यूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6— व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7— ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8— वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात